लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक - 269
मंगलवार, 27 जुलाई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, नोएडा, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.dainikbhaskar.com

06 कैसे होगा

वातावरण के उतार-चढ़ाव से धान की फसल में गम्भीर रोगों से बचाव कर हानि से बचें

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ एस.के. विश्वास ने बताया कि इस समय बरसात के मौसम में धान की फसल में कई रोग आते हैं। जिनके कारण धान की फसल का उत्पादन प्रभावित होता है। किसान भाई समय रहते यदि इन रोगों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉ विश्वास ने बताया कि बरसात के मौसम में वातावरण के उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इन रोगों के आ जाने से पत्तियों, तनो, गांठों एवं धान के दानों में काला रंग पड़ जाता है जिससे पौधों का पूरा हरा भाग काला सा दिखने लगता है। अपितु धान में दाने भी नहीं बन पाते है। डॉ विश्वास ने बताया कि इन रोगों के नियंत्रण के लिए किसान भाई इस वर्षा के समय नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक न करें। पोटेशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य मात्रा से थोड़ा अधिक बढ़ाकर प्रयोग करें। घने पौधों को बाहर निकाल दें यदि रोग नियंत्रण में न हो तो किसी भी कवकनाशी दवा जैसे कम्पैनियन मिक्चर या कंबोसेफ मिक्चर का 1.5 मिलीलीटर मात्रा 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। डॉ विश्वास ने बताया कि किसान भाई अपने धान की फसलों की निगरानी करते रहें। जैसे ही फसल पर रोग के लक्षण दिखाई पड़े तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करें।

www.facebook.com/worldkhabaarexpress www.twitter.com/worldkhabaarexpress www.youtube.com/worldkhabaarexpress

WORLD ख़बर EXPRESS

WORLD ख़बर एक्सप्रेस

26 जुलाई 2021, सोमवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabar

EXPRESS

सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के निदेशक ने दी जानकारी

बारिश में धान की फसल को बचाएं रोगों से: डॉ. विश्वास

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ. एसके विश्वास ने बताया कि इस समय बारिश के मौसम में धान की फसल में कई रोग आते हैं जिस कारण धान की फसल का उत्पादन प्रभावित होता है। किसान समय रहते यदि इन रोगों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो रोग लगने की संभावना कम रहती है।

डॉ. विश्वास ने बताया कि बारिश के मौसम में वातावरण के उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट और बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना ज्यादा रहती है। इन रोगों के आ जाने से पत्तियों, तनो, गांठों व धान के दानों में काला रंग पड़ जाता है जिससे पौधों का पूरा हरा भाग, काला सा दिखने लगता है। धान में दाने भी नहीं बन पाते है। डॉ. विश्वास ने बताया कि इन रोगों के नियंत्रण के लिए किसान बारिश के समय नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक न करें तथा पोटेशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य मात्रा से थोड़ा अधिक बढ़ाकर प्रयोग करें। घने पौधों को बाहर निकाल दें, यदि रोग नियंत्रण में न हो तो किसी भी कवकनाशी दवा जैसे कम्पैनियन मिक्चर या कंबोसेफ मिक्चर का 1.5 मिलीलीटर मात्रा 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। डॉ. विश्वास ने बताया कि किसान धान की फसलों की निगरानी करते रहें। जैसे ही फसल पर रोग के लक्षण दिखाई पड़े, तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करें जिससे धान की फसल से स्वस्थ व गुणवत्ता युक्त उत्पादन किया जा सके और किसान हानि से बच सकें।

कानपुर। मंगलवार • 27 जुलाई • 2021

राष्ट्रीय सहारा

धान की अच्छी फसल के लिए रोगों की रोकथाम जरूरी

धान की खेती करने वाले किसानों के लिए सीएसए वैज्ञानिक की सलाह

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

धान की अच्छी फसल के लिए पौधों की देखभाल व रोगों से बचाव के लिए रोकथाम करना जरूरी है। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ. एसके बिस्वास का कहना है कि यदि किसान समय रहते संबंधित रोगों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो रोग लगने की संभावना कम रहती है।

डॉ.बिस्वास ने बताया कि बरसात के मौसम में धान की फसल में कई रोग आते हैं। बरसात के मौसम में वातावरण में उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना ज्यादा रहती है। इन रोगों के आ जाने से पत्तियों, तनों, गांठों एवं धान के दानों में कालापन पड़ जाता है। इससे पौधों का पूरा हरा भाग काला सा दिखने लगता है। धान में दाने भी नहीं बन पाते हैं।

उन्होंने कहा कि धान की फसल में उक्त रोगों के नियंत्रण के लिए वर्षा के मौसम में नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक नहीं करना चाहिए। पोटैशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य मात्रा से थोड़ा अधिक बढ़ाकर प्रयोग करें तथा घने पौधों को बाहर निकाल दें। उन्होंने किसानों को अपने धान की फसल की निगरानी करते रहने व फसल पर रोग के लक्षण दिखते ही तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करने का सुझाव दिया है, जिससे वे हानि से बच सकें।

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, मंगलवार, 27 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 280, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

बरसात के मौसम में धान की फसल में कई रोगों के होने की संभावना

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। धान की फसल में बरसात के मौसम में कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिससे इसका उत्पादन प्रभावित होता है समय रहते नियंत्रण करने पर रोग लगने की संभावना कम हो जाती है बरसात के मौसम में उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना ज्यादा रहती है इन लोगों के आ जाने से पत्तियों, तनो, गांठों एवं धान के दानों में काला रंग पड़ जाता है जिससे पौधों का पूरा हरा भाग काला सा दिखने लगता है जबकि धान में दाने भी नहीं बन पाते है। यह बात सीएसएयू के कुलपति डॉ.डी. आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ एस.के. विश्वास ने बताते हुए कहा कि इन लोगों के नियंत्रण के लिए किसानों को वर्षा के समय नत्रजन भारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक नहीं करना चाहिए तथा पोटेशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य से थोड़ी बढ़ाकर प्रयोग करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि रोग नियंत्रण में ना हो तो किसी भी कवकनाशी दवा जैसे कम्पैनियन मिक्चर या कंबोसेफ मिक्चर का 1.5 मिलीलीटर मात्रा 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए तथा रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। उन्होंने किसानों को धान की फसलों की निगरानी करते रहने की सलाह देते हुए कहा कि जैसे ही फसल पर रोग के लक्षण दिखाई पड़े तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करें।

60ff065608dafCITY-5.pdf

बारिश में धान की फसल को कीट लगने की संभावना, सचेत रहें किसान

रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर करें दवा का छिड़काव

डॉ एस.के. विश्वास

कानपुर, 26 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ एस.के. विश्वास ने बताया कि इस समय बरसात के मौसम में धान की फसल में कई रोग आते हैं, जिनके कारण धान की फसल का उत्पादन प्रभावित होता है। किसान भाई समय रहते यदि इन रोगों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉ विश्वास ने बताया कि बरसात के मौसम में वातावरण के उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना च्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इन रोगों के आ जाने से पत्तियों, तनो, गांठों एवं धान के दानों में काला रंग पड़ जाता है जिससे पौधों का पूरा हरा भाग काला सा दिखने लगता है। अपितु धान में दाने भी नहीं बन पाते है। डॉ विश्वास ने बताया कि इन रोगों के नियंत्रण के लिए किसान भाई इस वर्षा के समय नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक न करें। तथा

पोटेशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य मात्रा से थोड़ा अधिक बढ़ाकर प्रयोग करें तथा घने पौधों को बाहर निकाल दें यदि रोग नियंत्रण में न हो तो किसी भी कवकनाशी दवा जैसे कम्पैनियन मिक्कर या कंबोसेफ मिक्कर का 1.5 मिलीलीटर मात्रा 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। डॉ विश्वास ने बताया कि किसान भाई अपने धान की फसलों की निगरानी करते रहें। जैसे ही फसल पर रोग के लक्षण दिखाई पड़े तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करें। जिससे धान की फसल से स्वस्थ व गुणवत्ता युक्त उत्पादन किया जा सके।

वर्ष : 21 अंक : 177 www.sandhyahalchalnews.com

P- 3 ▶ भगवान शिव के दर्शन को शिव मंदिरों में

आवाज आवाम की

सांध्य हलचल

प्रातः संस्करण, हिन्दी दैनिक

लखनऊ, मंगलवार, 27 जुलाई 2021, पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रुपया

वातावरण के उतार-चढ़ाव से धान की फसल में गंभीर रोगों के बचाव कर हानि से बचे

सांध्य हलचल ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं संयुक्त निदेशक शोध डॉ एस.के. विश्वास ने बताया कि इस समय बरसात के मौसम में धान की फसल में कई रोग आते हैं। जिनके कारण धान की फसल का उत्पादन प्रभावित होता है। किसान भाई समय रहते यदि इन रोगों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉ विश्वास ने बताया कि बरसात के मौसम में वातावरण के उतार-चढ़ाव के कारण धान की फसल में लीफ ब्लास्ट, कालर ब्लास्ट, नोड ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट, शीत ब्लाइट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट जैसी गंभीर रोगों के आने की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इन रोगों के आ जाने से पत्तियों, तनो, गांठों एवं धान के दानों में काला रंग पड़ जाता है जिससे पौधों का पूरा हरा भाग काला सा दिखने लगता है। अपितु धान में दाने भी नहीं बन पाते है। डॉ विश्वास ने बताया कि इन रोगों के नियंत्रण के लिए किसान भाई इस वर्षा के समय नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग अधिक न करें। पोटेशियम उर्वरक की मात्रा सामान्य मात्रा से थोड़ा अधिक बढ़ाकर प्रयोग करें। घने पौधों को बाहर निकाल दें यदि रोग नियंत्रण में न हो तो किसी भी कवकनाशी दवा जैसे कम्पैनियन मिक्कर या कंबोसेफ मिक्कर का 1.5 मिलीलीटर मात्रा 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। रोग की अधिकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। डॉ विश्वास ने बताया कि किसान भाई अपने धान की फसलों की निगरानी करते रहें। जैसे ही फसल पर रोग के लक्षण दिखाई पड़े तुरंत दवा डालने की व्यवस्था करें। जिससे धान की फसल से स्वस्थ व गुणवत्ता युक्त उत्पादन किया जा सके। और किसान भाई हानि से बच सकें।